रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन

सिन्धु श्रीदेवी

हाल के वर्षों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के बारे में चिन्ता बढ़ी है और यह बदलाव भी आया है कि अब आकलन को अधिगम में सुधार लाने के साधन के रूप में माना जाने लगा है। अपने बच्चों के बारे में जानने के लिए शिक्षक के लिए आकलन एक प्रभावी उपकरण है। अगर आकलन को ठीक से विकसित और व्याख्यायित किया जाए तो यह कोर्स के अनेक पहलुओं को स्पष्ट कर सकता है जैसे बच्चे की उपलब्धि और अधिगम के बारे में सही फीडबैक देना। अधिगम की कमियों के बारे में जानकारी देकर यह अधिगम में सुधार लाता है एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की जानकारी उपलब्ध कराता है। एक बच्चे के बारे में हम जितनी अधिक जानकारी इकट्ठा करते हैं, उसके अधिगम और अधिगम की कठिनाइयों के बारे में हमें उतनी ही अधिक स्पष्टता प्राप्त होती है।

स्कूल में योगात्मक आकलन में ज्यादा प्रत्यक्षता होती है। यह एक ग्रेड या इकाई या सत्र के अन्त में अधिगम के परिणामों की जाँच करता है। इससे यह जानने में मदद मिलती है कि शिक्षण एवं अधिगम के लक्ष्यों को किस हद तक प्राप्त कर लिया गया है। Kellough and Kellough शिक्षण और अधिगम को उन पारस्परिक क्रियाओं के रूप में देखते हैं जो एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। आकलन यह बताता है कि बच्चा कितनी अच्छी तरह से सीखता है और शिक्षक कितनी अच्छी तरह से पढ़ाते हैं। हम सब जानते हैं कि स्कूल में मूल्यांकन के जो तरीके हैं, वे मुख्य रूप से ज्ञान और तथ्यों के मापन पर जोर देते हैं तथा अधिगम को सुधारने की प्रक्रिया में सहायक अन्य पहलुओं की उपेक्षा करते हैं। यह प्रक्रिया सतत, अन्त:क्रियात्मक तथा प्रभावी होनी चाहिए ताकि अधिगम में होने वाली कठिनाइयों को समझने में मदद मिले और शिक्षण में परिवर्तन लाने के लिए सही जानकारी मिले। कक्षा के आकलन, जिन्हें हम रचनात्मक आकलन कहते हैं, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को जानकारी देते हैं। इसलिए शिक्षण प्रक्रिया तथा आकलन के बीच में तालमेल बिठाने की जरूरत है।

रचनात्मक आकलन कक्षा में ही किए जाते हैं। इससे प्राप्त जानकारी बच्चे के अधिगम व शिक्षक के शिक्षण, दोनों को ही सूचित करती है। इससे बच्चे को अपने अधिगम के बारे में और शिक्षक को अपने शिक्षण के बारे में फीडबैक मिलता है। यह आकलन शिक्षक को बताता है कि बच्चे ने अवधारणा को ठीक से सीखा या नहीं, शिक्षण-प्रक्रिया कक्षा की जरूरतों को पूरा कर पा रही है या नहीं या शिक्षण की कार्यनीति में किसी संशोधन की जरूरत तो नहीं आदि। यूँ तो रचनात्मक आकलन कई तरीकों से किया जा सकता है और उनमें से एक कार्यनीति सामूहिक गतिविधि हो सकती है। उदाहरण के लिए सीता नामक एक प्राथमिक शिक्षिका समूह को कुछ ऐसी चीजें देती हैं जैसे-गेंद, बक्से, पिरामिड, चकती (डिस्क), त्रिकोण और वर्ग आदि। फिर वे हर समूह के बच्चों से कहती हैं कि वे कोई-सी भी दो चीजें चुनें और उनकी समानताओं और असमानताओं का पता लगाएँ। हर समूह चीजों की समानताओं और असमानताओं पर चर्चा करता है और उसे लिख लेता है। जब बच्चे चर्चा तथा अवलोकन करके अपनी अवधारणात्मक समझ को लिख रहे होते हैं तो सीता कक्षा का चक्कर लगाती रहती हैं। अपने इस अवलोकन का उपयोग वे अन्य गतिविधियों को दर्ज करने के लिए करती हैं जैसे कि बच्चों ने अपने काम को समूह में कैसे बाँटा, कैसे काम किया, अवधारणा के बारे में समूह ने चर्चा कैसे की आदि। बाद में वे बच्चों की लिखित सामग्री इकट्ठा करती हैं। अगले दिन

हर समूह की लिखित सामग्री की प्रतियाँ बनाती हैं और समूह को देकर उनसे उसकी अवधारणा, हस्तलेख और स्वच्छता का विश्लेषण करने को कहती हैं। फिर हर समूह अपनी समीक्षा को पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करता है। उनके रिकॉर्ड से सीता को यह पता चल जाता है कि कक्षा को उस प्रकरण को सीखने में कौन-सी दिक्कतें पेश आ रही हैं और फिर वे अपनी अगली कक्षा में इन कठिनाइयों को सम्बोधित करने की योजना बनाती हैं। जिस बच्चे ने गतिविधि में भाग नहीं लिया, वे उससे बातचीत करती हैं और उसके कमजोर प्रदर्शन के कारण का पता लगाती हैं तथा उपचारात्मक कक्षा लेती हैं। इस गतिविधि के माध्यम से सीता ने अधिगम के रूप में आकलन के मूल्य पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार की प्रक्रिया में अवलोकन के माध्यम से शिक्षक हर बच्चे की अवधारणात्मक समझ को रिकॉर्ड करते हैं और साथ ही उन्हें यह भी पता चलता है कि किन बच्चों को सीखने में मुश्किल होने के कारण उनकी मदद की आवश्यकता है। हर बच्चे की जानकारी मिलने के बाद वे फीडबैक देते हैं और अधिगम सम्बन्धी इन कठिनाइयों के समाधान के लिए अपने शिक्षण की योजना बनाते हैं। सीता यह बात समझती हैं कि अधिगम की इस कमी को पूरा किए बिना अगले प्रकरण या टॉपिक पर जाने से अवधारणाओं के निर्माण में कोई मदद नहीं मिलेगी। जिन बच्चों को वह प्रकरण सीखने में मुश्किल हुई, उनके लिए वे उपचारात्मक कक्षाएँ चलाती हैं।

रचनात्मक आकलन के माध्यम से सीता ने साथियों के आकलन के महत्त्व को भी समझा है। रचनात्मक आकलन कक्षा में किया जा सकता है-इसे बताने के लिए यह एक उदाहरण था। इसे संचालित करने के और भी कई तरीके हैं। हर बच्चा अलग तरीके से सीखता है, इसलिए अगर उसके आकलन के लिए शिक्षक विभिन्न साधनों का प्रयोग करे तो वह अधिक प्रभावी होगा जैसे कि-

विद्यार्थी साक्षात्कार: इसमें बच्चों से प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से देने की अपेक्षा की जाती है। ये प्रश्न-शृंखलाएँ उनकी समझ के विस्तार और गहराई का अनुमान लगाने के लिए एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।

अवलोकन: कक्षा में चक्कर लगाते हुए शिक्षक काम में लगे हुए बच्चों का अवलोकन करते हैं और उनके काम में उन्हें दिशा निर्देश देते हैं व उनकी मदद करते हैं। इससे शिक्षक को समूह या व्यक्तिगत कार्य को समग्र रूप में समझने में मदद मिलती है।

प्रश्न पूछना: कक्षा में आमतौर पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान प्रश्न पूछने से शिक्षक को बच्चे के ज्ञान की जानकारी मिलती है। इससे शिक्षक व बच्चे दोनों को तत्काल फीडबैक मिल जाता है और शिक्षण में बदलाव के लिए गुंजाइश भी रहती है।

चर्चाएँ: कक्षा में चर्चा शुरू करने के लिए शिक्षक मुक्त प्रश्न पूछ सकते हैं और बच्चे उस पर विचार-विमर्श कर सकते हैं। इसका उद्देश्य समीक्षात्मक सोच और रचनात्मक सोच के कौशलों का विकास करना है।

अगर शिक्षक रचनात्मक आकलन का प्रयोग शिक्षण के ढाँचे के रूप में करें तो बच्चों के साथ उनकी बातचीत के तरीके में बदलाव आएगा। यह आकलन अधिगम का सुगमीकरण करता है, शिक्षक को अपना शिक्षण बच्चों की जरूरतों के अनुसार समायोजित करने के लिए फीडबैक देता है, बच्चों को उनके अधिगम के बारे में फीडबैक देता है और प्रकरण में बच्चे की सामने आने वाली कठिनाइयों का निदान करता है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि रचनात्मक आकलन अधिगम 'के लिए' है।

बच्चों, शिक्षकों, माता-पिता और स्कूल के अधिकारियों के लिए यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि अध्ययन के दौरान बच्चों ने कितना सीखा है। जो आकलन किसी कोर्स, इकाई या सत्र के अन्त में किया जाता है और जिससे मिली जानकारी को ग्रेडिंग या प्रमोशन के लिए प्रयोग में लाया जाता है, उसे योगात्मक आकलन कहते हैं। यह तब होता है जब शिक्षक बच्चे के काम की अन्तिम प्रस्तुति का आकलन करते हैं। मुख्य रूप से इसका सम्बन्ध अधिगम के परिणामों से है न कि शिक्षण की

योजना से और यह अधिगम 'का' आकलन है। हम इस प्रकार के प्रश्न पर विचार कर सकते हैं-

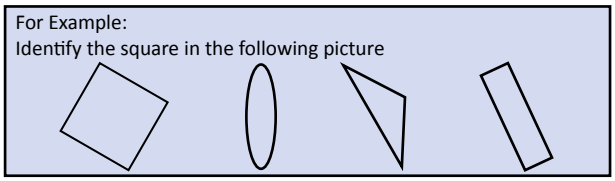

इस प्रश्न से शिक्षक को यह जानने में मदद मिलती है कि बच्चा आयत के गुणों के बारे में जानता है या नहीं जो पिछले पाठ के अधिगम का परिणाम है और साथ ही यह पिछली कक्षा में किए गए योगात्मक आकलन को भी दर्शाता है। योगात्मक आकलन में शिक्षक द्वारा पढ़ाई गई सब बातों को शामिल करना होता है तथा यह रचनात्मक आकलन पर भी चिन्तन करता है। इस प्रकार योगात्मक आकलन का मुख्य प्रयोजन कोर्स के पाठ्यक्रम के अधिगम के साथ-साथ बच्चे के ज्ञान, कौशलों व समझ की थाह लेना है। अधिगम की राहों में आगे बढ़ते समय योगात्मक आकलन इस बात को जानने के लिए भी किया जाता है कि बच्चे ने पाठ्यक्रम द्वारा नियत मानकों को प्राप्त किया है या नहीं। विविध प्रकार के योगात्मक आकलनों को करने से शिक्षक अपने बच्चे के अधिगम को समझ पाते हैं। योगात्मक आकलनों के अनेक रूप हैं जैसे-

पेपर पेंसिल टेस्ट: विद्यार्थियों से किसी इकाई, सत्र या कोर्स के अन्त में टेस्ट लिखने को कहा जाता है।

लिखित कार्य: विद्यार्थियों से किसी टॉपिक या गतिविधि या घटना के बारे में लिखने को कहा जाता है और इस कार्य के साथ एक रूब्रिक भी दिया जाता है।

मौखिक कार्य: शिक्षक विद्यार्थियों से कोई कहानी या घटना या टॉपिक सुनाने को कहते हैं और बच्चे द्वारा हासिल किए गए कौशलों और क्षमताओं की जाँच करते हैं।

मानक टेस्ट: बोर्ड व प्रवेश परीक्षा जैसी परीक्षाओं की शर्तों को पूरा करने के लिए विद्यार्थी विषय-सामग्री से सम्बन्धित मानक टेस्ट लिखते हैं। योगात्मक आकलन में यह बात महत्त्वपूर्ण है कि ऊपर बताए गए सभी प्रकार के आकलनों से मिली जानकारी को विद्यार्थियों की उपलब्धि या ग्रेडिंग या प्रमोशन के लिए प्रयोग में लाया जाए।

हम यह जानते हैं कि आकलन का प्राथमिक प्रयोजन बच्चों को ग्रेड करना या रैंक देना नहीं है, वरन ऐसा फीडबैक देना है जो उनके अधिगम के बारे में लिए जाने वाले निर्णयों को प्रेरित करते हैं। योगात्मक आकलन एवं रचनात्मक आकलन दोनों की बच्चे की अधिगम प्रक्रिया में अहम भूमिका है। भले ही इनमें अन्तर है, लेकिन दोनों के बीच के सही सन्तुलन का अधिगम पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। योगात्मक आकलन एवं रचनात्मक आकलन दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं और उन्हें साथ में ही देखना चाहिए। कुछ परिस्थितियों में वे एक से ही दिखाई दे सकते हैं, पर उनके उद्देश्य व समय उनके लेबल को निर्धारित करते हैं। के बर्क की पुस्तक "बैलेंस्ड असेसमेण्ट मॉडल" इन दोनों आकलनों की तुलना इस प्रकार से करती है : रचनात्मक आकलन प्रशिक्षण के उन पहियों के समान हैं जो बच्चों को स्कूल के पार्किंग स्थल में साइकिल चलाने का अभ्यास करने और आत्मविश्वास जुटाने में सहायता देते हैं। प्रशिक्षण के पहियों को हटा देने के बाद उन्हें योगात्मक आकलन का सामना करना पड़ता है ताकि वे अपनी मंजिल की ओर केवल दो पहियों पर सवार होकर चल सकें। ली शुलमैन ने आकलन को 'अपर्याप्तता का मेल' कहा है क्योंकि उनका मानना था कि एक या दो उपकरणों का उपयोग करके किसी की क्षमताओं का आकलन करना सम्भव नहीं है। इसे तो रचनात्मक आकलन एवं योगात्मक आकलन की कई आकलन रणनीतियों का मिला-जुला रूप होना चाहिए जो बच्चे की शक्तियों, कमजोरियों, रुचियों, कौशलों और अभिप्रेरण के बारे में सूचित करें।

रचनात्मक आकलन के सकारात्मक प्रभाव को शिक्षकों एवं पाठ्यक्रम के डिजाइनरों ने व्यापक रूप से स्वीकार किया है। एक अच्छे रचनात्मक आकलन के वास्तविक कार्यान्वयन में अनेक बाधाएँ हो सकती हैं क्योंकि हम

सभी जानते हैं कि इस प्रकार का आकलन एक बहुत ही गहन और सतत कक्षा प्रक्रिया है और इसमें कई चुनौतियाँ हैं। इसके अलावा, रचनात्मक आकलन का मुख्य प्रयोजन यह है कि इसके द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग आगे के अधिगम के लिए कैसे किया जाता है।

बच्चे के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए शिक्षक आकलन की अनेक रणनीतियों का प्रयोग करते हैं। ऐसी बाल-केन्द्रित गतिविधियों को विकसित करने के लिए शिक्षक को हर चरण की योजना बनाने और पूर्व निर्धारित मापदण्डों के आधार पर आकलन करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, शायद इसका कारण यह है कि किसी गतिविधि विशेष के बारे में विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया अनिश्चित होती है। हम सब जानते हैं कि हर बच्चा अलग तरीके से सीखता है और उसके आकलन का तालमेल उसके सीखने के तरीके से होना चाहिए। कक्षा का बड़ा आकार और पाठ्यक्रम की व्यापक जरूरतें ऐसे गहन, अन्त:क्रियात्मक एवं व्यक्तिगत आकलन के लिए बाधा उपस्थित करती हैं। हमारे सन्दर्भ में तो एक ही कक्षा के विभिन्न विभाग होते हैं और एक ही विषय को विभिन्न शिक्षक पढ़ाते हैं। ऐसी स्थिति में आकलन के एक ही मापदण्डों की व्याख्या और अनुप्रयोग भिन्न हो सकते हैं। इससे आकलन की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो सकते हैं। हम यह बात समझ सकते हैं कि रचनात्मक आकलन एक सतत और विस्तृत प्रक्रिया है जिसमें बहुत समय लगता है। रचनात्मक आकलन के गहन व सतत तरीके को अपनाने के लिए शिक्षकों में आकलन की जानकारियों का विश्लेषण करने, व्याख्या करने और अधिगम में सुधार हेतु बच्चों को फीडबैक देने में सहयोगी क्षमताओं का होना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर कक्षा के आकार को छोटा करने से शिक्षक को बच्चों के अधिगम की जरूरतों को समझकर उनके अनुसार काम करने के लिए अधिक समय मिलेगा।

सिन्धु श्रीदेवी *अज़ीम प्रेमजी इंस्टीटयूट फॉर असेसमेंट एण्ड एक्रिडिटेशन में एक सहयोगी के रूप में कार्यरत हैं। पिछले दो वर्षों के कार्यकाल में उन्हें अधिगम और आकलन की प्रक्रिया के क्षेत्र में एक व्यापक परिप्रेक्ष्य मिला है। उन्होंने लारेंस हाई स्कूल, बंगलौर में पाँच वर्षों तक गणित विषय पढ़ाया। इन पाँच वर्षों में उन्हें शिक्षण, अधिगम व आकलन प्रक्रिया के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में सीखने का अवसर मिला। उन्होंने स्कूल में अनेक बाह्य आकलनों का संचालन भी किया। उनसे sindhu.sreedevi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*